लोक और मीडिया
(राष्ट्रीयता के संदर्भ में)

डॉ. लोकेश कुमार गुप्ता
माता सुन्दरी महिला महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

मीडिया एक संवाद है हम और हमसे। मीडिया एक संवाद है हम और तुम के मध्य। सूदूर एकांत में बैठकर समग्र समाज की प्रस्तुति का आभास मीडिया कराता था। मीडिया की संकल्पना में व्यक्ति और लोक के मध्य पनप रहे अलगाव से मुक्ति थी। व्यक्ति और लोक के पारस्परिक साहचर्य को व्यक्त करना मीडिया का धर्म था। उसका धर्म था स्वतंत्रता को व्यक्त करना, धर्म था मानवता की मुक्ति के राग प्रस्तुत करना, धर्म था लोकधर्म के निर्वाह का, धर्म था उपेक्षित मानवता के पक्ष को उपस्थित करने का, धर्म था हाशिये की आवाज को बुलंद करने का, धर्म था बढ़ रहे मानवीय रिश्तों की दूरियों को कम करने का। मीडिया की संकल्पना में संभवत: विभिन्न स्रोतों विभिन्न प्रकार की चर्चाओं और चर्याओं से रूबरू कराना था।

मीडिया ही माध्यम है जो व्यक्ति औऱ लोक के संबंध को मजबूत करने की पुरजोर कोशिश करता है। उसके राग के साथ, लोकराग के साथ। लोकधुन को पकड़ने और ज़माने की रफ्तार के साथ, ठहराव के साथ उस लोक की संस्कृति और साहित्य को उपस्थित करने की संकल्पना भी थी। संभवत: मीडिया को इस प्रकार की संकल्पना से संपृक्त होना चाहिए। तभी चाल, चरित्र और चलन में मीडिया की राष्ट्रीय छवि को उभारा जा सकता है। बात मीडिया की संकल्पनाओं को स्मृत करते हुए वर्तमान समाज में लोक साहित्य-संस्कृति की है।

मीडिया का चरित्र वर्तमान परिदृश्यों में ग्लोकल बनाने का प्रयास है। ग्लोकलीकरण से सभ्यताओं के स्वरूप परिवर्तित हो रहे हैं। वर्तमान में मीडिया में ग्लोबल गांव की अवधारणा प्रकट है। जैसे-जैसे दुनिया में सोशल मीडिया हावी होता जा रहा है और आई टी इंफ्रास्ट्रक्चर प्रभावी होता जा रहा वैसे-वैसे वैश्विक समाज के बीच की दूरियां निरंतर कम हो रही है। हो सकता है ये सही हो लेकिन इस निरंतर कम होती दुनियावी दूरियों और ग्लोकल होते समाज में आंचलिक लोक उपेक्षा के साये में खड़ा है। आज मीडिया इंस्टीट्यूस और सोशल मीडिया दोनों ही तीव्र गति के साथ ग्लोकलीकरण की ओर बढ़ रहे हैं। वर्तमान मीडिया और उसके भिन्न आयाम इसी ग्लोकल सभ्यता का प्रसार भी कर रहे है। मीडिया में भारतीय लोक और उसकी पृष्ठभमि के साक्षात्कार आंशिक है।

यदि इस संदर्भ में बात करते हुए आगे बढ़ें तो जिस प्रकार आज ग्लोकल की अवधारणा का विस्तार हो रहा है उससे भविष्य में स्थानिकता, गांव और लोक का मरना सुनिश्चित है। ये उन लोगों के लिए चुनौती है जो विकास का एक मात्र रास्ता ग्लोकलीकरण में खोजते हैं। ग्लोकल को विकास का एकमात्र रास्ता कहने वाले वैश्विक विकास को तो समझ रहे होंगे लेकिन ग्रामीण संस्कृति और सभ्यता आज भी इंतजार में बैठी है विकास के रास्तों का। वर्तमान समय और समाज को इंटरनेट ने पूरी दुनिया से जोड़ा है लेकिन देश के अनेक ऐसे ठौर है जो अभी सड़क से भी जुड़ना बाकी है। हम अभी भी ऐसे अंचलों को जानते हैं जहाँ ज्ञान और प्रकाश की व्यवस्था भी नहीं। अनुपस्थित अधुनातनता के साथ जिंदा समाज की दास्तानों को समाये हुए है। ऐसे में उस लोकसाहित्य का संरक्षण और कठिन हो जाता है जो सुविधाओं और संरक्षण के अभाव में क्षीण होता जा रहा है। संभवत: भारतीय मीडिया समाज इस ओर अपनी दृष्टि करने की कोशिश करेगा ताकि राष्ट्रीय समाज के उपेक्षित को भी प्रवेश समाज की धारा में मिल सके।

लोक नई पहचान का मोहताज नहीं है। लोक अपनी तमाम प्रकार की स्वीकृति और अस्वीकृति में लोक बना रहना स्वीकार करना चाहेगा। वह किसी प्रकार की ग्लोकल अवधारणा और मीडियाई बनावटी अवधारणा से कोसों दूर रहना चाहता है। वह नहीं चाहता कि उसकी संस्कृति, सभ्यता तथा उसके अस्तित्व के साथ छेड़छाड़ करने की कोशिश की जाए। लोक यथास्थितिवादी नहीं होते हैं। मीडिया से अनुरोध इतना है कि मुख्य धारा से लोक को संलग्न किया जाए किन्तु उसके मूल चरित्र और चित्त के साथ किसी प्रकार केअतिवाद के साथ व्याख्यायित न किया जाए।

आज का दौर गांधी के द्वारा प्रदर्शित राष्ट्र राज्य की अवधारणा को खंड़ित करता है। अस्वीकश्त करता है। वर्तमान में हम मात्र पश्चिमी मॉड़ल का अनुकरण कर रहे हैं। राष्ट्र राज्य की अवधारणा में भी उसी मॉडल को अपनाने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। पश्चिमी सभ्यता अधिकांशत: एकोन्मुखी सभ्यताएं है जबकि भारतीय सभ्यता का विकास बहुरूप में हुआ है। भाषाई,

धार्मिक के साथ-साथ अन्य प्रकार की विविधताएं वर्तमान है। अब हम किस प्रकार सुनिश्चित करें कि अखंड भारत को एक पक्षीय नज़र से उकेरें। वर्तमान परिदृश्य में हम आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता की ओर बढ़ रहे हैं। जैसे-जैसे आधुनिकता और उत्तरआधुनिकता की ओर बढ़ रहे वैसे-वैसे हम अपनी पारंपरिक सभ्यता और संस्कार से व्यक्ति को उपेक्षित करते जा रहे। सनातनता से दूर जा रहे हैं। पारिवारिक गठन का विघटन और न्युक्लियर फैमिली की अवधारणा हमारे समक्ष है। पेज थ्री और लाइफ इन मेटरो फिल्म इस समय इस प्रकार के संदेश प्रदर्शित करती है तो डोर सदृश फिल्म वर्तमान आधुनिक समाज में भी परंपरा, रूढ़ियों के निदर्शन प्रस्तुत करते हैं। मीडिया इस संपूर्ण का विश्लेषण बहुत दूर तक व्यक्त करता है। इन बदलते परिवेशों में मीडिया का दायित्व बनता है कि वह सही स्वरूप से व्यक्ति-समाज को अवगत कराए।

ग्रामीण संस्कृति में किसी प्रकार की चकाचौंध अथवा ग्लेमरस जीवन का अभाव पाया जाता है संभवत: मीडिया का आकर्षण उस कथ्य में नहीं बनता। मीडिया टी आर पी और ग्लेमर के पीछे दौड़ता है या फिर ऐसे रहस्य को तलाशने की कोशिश करता है जो किसी प्रकार के सस्पेंस को छुपाये बैठा हो।

मीडिया को हम चाहे इंस्टीटयूशनाइज्ड करने की कोशिश करें किन्तु वह आज भी असंगठित स्वरूप में ही हमारे समक्ष है। उसका कोई संगठन नहीं है जो समाज के सुदूर इलाकों में अपनी पहुंच रखता हो। दूरदराज की सामाजिक उपस्थिति को प्रकट करता हो। मीडिया को अपना राष्ट्रीय स्वरूप व्यक्त करना है तो प्रथमत: उसे अपना राष्ट्रीय संगठन खड़ा करना होगा। वर्तमान में चाहे जितनी भी एजेन्सियां कार्यरत है वे सब बहुत दूर तक अपने संगठन का विकास नहीं कर पा रही है इसीलिए संभवत: आज दूरदराज को व्यक्त करने में कहीं सोशल मीडिया पारंपरिक मीडिया से आगे है। मीडिया संगठनों और एजेन्सियों को अपना स्वरूप संगठित और विस्तृत करना होगा।

मीडिया लोकवृत का सही विश्लेषण नहीं है। मीडिया का राष्ट्रीय चरित्र तभी समक्ष आएगा जब वह लोक की समझ को जनता में उकेरने का प्रयास करेगा। लोकवृत को व्याख्यायित करता हुआ, लोक की संरचनात्मक व्यवस्था के प्रति स्नेह और संवेदना को व्यक्त करता मीडिया। मीडिया में लोक झांकी के रूप में रहा। लोक को शहरी मनोरंजन के साधन के रूप में दिखाया जाता है। उनकी परंपरा और संस्कृति को दूर की, सड़ी गली और दकियानुसी बताकर मीडिया आज भी हंसी करने की कोशिश करता है। राष्ट्र और मीडिया के रिश्ते लोक की झांकी नहीं बल्कि उसकी व्यवस्थागत संरचना की कमियों को दूर करने का प्रयास करें तो अच्छा था। यदि किसी प्रकार की सामाजिक समस्या, वैषम्य अथवा समरसता का अभाव है तो उसके लिए मीडिया को जन समाज को जागरूक करने के प्रयास करने चाहिए। राष्ट्रीय भावना के प्रसार के लिए व्यक्ति हृदय में स्वतन्त्र अस्मिता और उन्मुक्त समाज का स्वप्न दिखाने का मीडिया प्रयास कर सकता है। डिस्कवरी या अन्य खोजी मीडिया चैनल वर्तमान लोक परंपराओं को विरासत के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस प्रदर्शन में नगरीय बोध के समक्ष लोक के बोध को कम करके आंका जाता है। मीडिया में लोक का देशी अंदाज तो है लेकिन लोक की वास्तविक छवि गायब है। धूमिल है। समाचारों की हेडलाइन्स में भी लोक नहीं है।

पत्रकारिता एक नगरीय भाव और अवधारणा रही। इसीलिए वह नगरीय आवेश और आगोश में रही। संभवत: इसी कारण से और लोक संदर्भित संरचना के अभाव के कारण लोक मीडिया में निरंतर उपेक्षित होता रहा। मीडिया गांवों से विस्थापन की समस्या को कम रेखांकित करता है। ना ही उस विस्थापन को रोकने का कोई प्रयास और सुझाव मीडिया प्रस्तुत करता है। वर्तमान मीडिया पारस्परिक सौहार्द्र के भाव को व्यक्त और प्रस्तुत करने में भी असमर्थ हैं।

मीडिया को अपनी मुहिम चलानी चाहिए जिसमें लोकभाषाओं और बोलियों के संरक्षण के प्रयास करने होंगे। यदि लोक भाषाएं और बोलियां सुरक्षित रहेगी तो आने वाले समय में हमारी सभ्यता और संस्कृति भी जीवित रहेगी। लेकिन वर्तमान में हिन्दी और अंग्रेजी को ज्ञान प्रसार की भाषा के रूप में अधिकृत किये जाने के बाद संभवत: लोकभाषाएं शनै:-शनै: विलुप्त हो रही है। यहाँ मात्र भाषाएं नहीं मर रही हैं बल्कि उस भाषा से संदर्भित ज्ञान, संस्कृति और संस्कार ही नहीं मर रहे बल्कि एक जीता जागता समूल समाज नष्ट हो जाता है। अतएव मीडिया को लोक को बचाने की मुहिम में लोकभाषाओं के संरक्षण के सवाल को निरंतर जीवित रखना चाहिए। ये सही बात है कि अखंड भारत के निर्माण के लिए एक आवश्यक भाषा होती है लेकिन ये भी सच है कि एक भाषा के जीवित रहने से समाज अपनी विविधता में जीवित रहता है तथा विविध सभ्यताओं और संस्कृतियों के समागम से लोकतांत्रिक व्यवस्था की बुनावट मजबूत होती है।

मीडिया अब समाचारों के अतिरिक्त अब सब कुछ दिखाता है। जिसमें अपराध है, सिनेमा है तो क्रिकेट भी, वास्तुशास्त्र है तो अस्ट्रोलोजी है, सैक्स स्कैण्ल के खुलासे भी। ईश्वरीय आस्थाओं को तलाशता मीडिया वर्तमान वैयक्तिक सामाजिक आस्थाओं को दरकिनार करता हुआ चलता है। मंदिर और मस्जिद के गुणगान करता मीडिया मंदिरों और मस्जिदों में पल रहे अनैतिक कर्मों से संभवत: अवगत कराने का प्रयास कम ही करता है। वर्तमान मीडिया आज की बड़ी बहस में चुपके से सरकार को पूरा अवसर प्रदान कर देता है कि वह नीतिगत बदलावों को मीडिया की बडी बहस के शोर में प्रस्तुत कर सके।

ग्लोबलाइजेशन का भावविचार सांफ्रांसिस्को, लंदन और युनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका से संचालित है। हाल में भारतीय राजनीति में आ रहे बदलाव को इस संदर्भ में परखा जा सकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राहुल गांधी के द्वारा विदेशों में

जाकर दिये गए उद्‌बोधन काफी मायने रखते हैं। उक्त उद्‌बोधन भारतीय राजनीति में अपना स्थान विशेष ही नहीं रखते हैं बल्कि राजनीति को एक मोड़ भी प्रदान करते हैं। लोक संस्कृति के विकास और विन्यास को समझाने का प्रयास अन्य से कम है। राष्ट्रवादी मीडिया अपने सभी प्रकार के संदर्भों में लोक विन्यास को समझाते हुए संस्कृति का विनाश बचाने की पुरजोर कोशि करेगा। मीडिया देश और परदेश में लोक को जीवित रखता है तो मीडिया लोक के रचनात्मक कलेवर को उपस्थित करने का प्रयास करेगा।

डॉ. हरीश अरोड़ा की 'साहित्य संचय प्रकाशन' से प्रकाशित पुस्तक